## अन्य वन उत्पाद

अन्य वन्य उत्पाद जैसे जलौनी (जलाने योग्य लकडी), रेशे (फाइबर), बीज, शहद, पत्ते, छाल, लीसा (गोंद), कवक, फूल, चारा इत्यादि भी आजीविका के स्त्रोत उपलब्ध कराने में सहायक हैं।

झूला (लाइकन/शैवाल) जो कि आजीविका का एक अच्छा स्रोत है। बांज के जंगलों में बहुतायत में उपलब्ध है। इसका उपयोग मसालों, सुगंधों तथा रंजक निर्माण में होने के कारण, यह वन समीप ग्रामों की आय का मुख्य स्रोत बन गया है। कुछ बहुउपयोगी प्रजातियां जैसे भिमल और खड़ीग पुरातन काल से पहाड़ी क्षेत्रों में ग्रामीण सभ्यता का अभिन्न अंग है।

कीडा–जड़ी जो कि मशरूम कवक है, यारसागम्बू के नाम से भी जानी जाती है। कीडा–जड़ी समुद्र तल से 4000 मीटर की ऊँचाई पर पाई जाती है। अपने उच्च गुणधर्मों और मूल्य के कारण यह पिथौरागढ, बागेश्वर और चमोली जिले के संग्रहणकर्ताओं की आजीविका और आर्थिक स्थिति में आशातीत वृद्धि का कारण बनी है।

## वितरण योग्य

- उत्तराखंड़ में वन आधारित आजीविका का डेटाबेस।
- आजीविका हेतु वनों पर आधारित लोगों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति की जानकारी।

## परिणाम

- उत्तराखण्ड में वन आधारित आजीविका पर संसाधन एवं सूचना केन्द्र का निर्माण।
- अध्ययन से उत्पन्न जानकारी राज्य में गैर प्रकाष्ठ वन उपजों के सतत् प्रबन्धन एवं आजीविका के बेहतर अवसरों की तलाश में सहायक होगी।

## हितधारक

- नीति निर्धारक
- अनुसंधान एंव शैक्षिक संस्थांए
- गैर सरकारी संस्थान
- औद्योगिक क्षेत्र
- विश्वविद्यालय एंव कॉलेज
- स्थानीय समुदाय


**सौजन्य**

सत्यमेव जयते

Ministry of Environment, Forest & Climate Change

राष्ट्रीय कैम्पा (CAMPA) सलाहकार परिषद तथा वन, पर्यावरण एंव जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

राज्य विज्ञान एंव प्रैद्योगिकी परिषद, यूकॉस्ट, उत्तराखण्ड।



**परियोजना सदस्य**

**डॉ. राजेन्द्र डोभाल,** महानिदेशक, यूकॉस्ट
**डॉ. बी0 पी0 पुरोहित,** संयुक्त निदेशक, यूकॉस्ट
**डॉ. पीयूष जोशी,** वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी, यूकॉस्ट
**डॉ. अजीत कौर,** वरिष्ठ वैज्ञानिक, उत्कृष्टता केन्द्र, यूकॉस्ट
**श्री सिद्धार्थ नपलच्याल,** वैज्ञानिक, उत्कृष्टता केन्द्र, यूकॉस्ट
**कंचन डोभाल,** कनिष्ठ अध्येता, उत्कृष्टता केन्द्र, यूकॉस्ट
**सीमा मैखुरी,** कनिष्ठ अध्येता, उत्कृष्टता केन्द्र, यूकॉस्ट

**वन आधारित आजीविका उत्कृष्टता केन्द्र**
राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, यूकॉस्ट,
देहरादून, उत्तराखण्ड,
विज्ञान धाम, झाझरा देहरादून, उत्तराखण्ड

**दूरभाष–** +91–8193099431–34, +91–9412051557
Email: coe-moef@ucost.in
Website: www.ucost.in



XPRESSIONS: 9219552563 | Doc. No. XPS2406171027


# वन आधारित आजीविका उत्कृष्टता केन्द्र

CENTRE OF EXCELLENCE FOREST BASED LIVELIHOOD

SCIENCE & TECHNOLOGY COUNCIL ucost UTTARAKHAND

वर्ष २०१५ में राष्ट्रीय कैम्पा सलाहकार परिषद तथा पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (यूकॉस्ट) के अधिक्षेत्र में वन आधारित आजीविका पर उत्कृष्टता केन्द्र स्थापित किया गया है। यह राज्य में अपनी तरह का पहला केन्द्र है जो वन आधारित उत्पादों एवं वन संसाधनों पर निर्भरता रखने वाले वन सीमावर्ती निवासियों के सरोकारों पर केन्द्रित है।

## उद्देश्य

- वन आधारित आजीविका पर उपलब्ध समस्त आंकड़े एकत्रित करना (औषधिय पादप एवं बॉस/रिंगाल प्रजाति तथा उनके आदान–प्रदान का वितरण केन्द्र बनना।
- विभिन्न वन उत्पादों के लिए मूल्य एवं आपूर्ति श्रृंखला का विश्लेषण करना।
- लक्ष्य केन्द्रित चर्चा द्वारा लोगों की आजीविका हेतु वनों पर निर्भरता का आंकलन करना।
- विभिन्न सरकारी, गैर सरकारी संगठनों, निजी संस्थानों एवं अन्य वन आजीविका क्षेत्र के विशेषज्ञों की जानकारी प्राप्त करके संसाधन निर्देशिका तैयार करना।
- वन समीप ग्रामों का सामाजिक–आर्थिक विश्लेषण करके उनकी वनों पर सांस्कृतिक निर्भरता का आंकलन करना।

## परिदृष्टि

- वन आधारित आजीविका पर एक संसाधन एवं ज्ञान केन्द्र बनना।
- राज्य में सतत् तथा स्थायी आजीविका के अवसरों में वृद्धि हेतु योगदान करना।

## अवधारणा

उत्तराखण्ड में राज्य के विकास में वनों का महत्वपूर्ण योगदान है और 80 प्रतिशत लोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपनी आजीविका एवं भरण–पोषण हेतु वनों पर निर्भर हैं। वन चारा, जलौनी लकडी (ईधन), खाद्य पदार्थ, निर्माण सामग्री, औषधि इत्यादि प्रदान करने के साथ–साथ कई पर्वतीय फसलों के लिए सूक्ष्म जलवायु का भी सृजन करते हैं। गैर–काष्ठ वन उपजों में औषधीय पादप एवं बांस बेहतर आजीविका के अवसर उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह उत्कृष्टता केन्द्र वनाधारित आजीविका और आय सृजन के अवसरों पर आंकडे सृजित करने हेतु प्रयासरत है।

## चयनित आजिविका संसाधन

### बांस

बांस जो कि सदियों से मानव सभ्यता का हिस्सा रहा है गरीबों की इमारती लकड़ी भी कहलाता है। उत्तराखण्ड में प्राकृतिक रूप से 8 प्रकार की बांस प्रजातियां पाई जाती हैं। जिनमें से 4 मोटी प्रजातियां समुद्र तल से 300–1500 मीटर की ऊँचाई में पाई जाती है। यह मुख्यतः कागज और घरेलू सामान बनाने में प्रयुक्त होते हैं। शेष 4 पतली प्रजातियां रिंगाल के नाम से जानी जाती है जो समुद्र तल से 1500–3500 मीटर की ऊँचाई में पाई जाती है। यह आमतौर पर टोकरी, चटाई, गमले बैग ओर अन्य उत्पादों को बनाने में इस्तेमाल की जाती है। यह केन्द्र उत्तराखण्ड में बांस की उपलब्धता एवं आजीविका के लिए बाँस पर निर्भरता की जानकारी एकत्रित करेगा।

### औषधीय पौधे

उत्तराखण्ड राज्य विभिन्न जलवायु एवं भौगोलिक परिस्थितियों के कारण विभिन्न प्रकार के औषधीय पौधों का केन्द्र है। राज्य में औषधीय पौधों की लगभग 700 प्रजातियां हैं जो कि पारम्परिक रूप से विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों जैसे आयुर्वेद, यूनानी, सिद्धा तथा होम्योपैथिक का हिस्सा रही हैं। उत्तराखण्ड के विभिन्न औषधीय पौधे न केवल पारम्परिक चिकित्सा उद्योग का आधार हैं बल्कि भारतीय आबादी के एक बड़े हिस्से को आजीविका एवं स्वास्थ्य सुरक्षा भी प्रदान करते हैं।

उत्कृष्टता केन्द्र राज्य में उपलब्ध सभी औषधीय पौधों एवं उनकी उपयोगिता से सम्बन्धित जानकारी एकत्रित करेगा।